राजा ने कृतज्ञभाव से स्वीकार किया। जब बात-चीत आरम्भ हुई तथा महाराजा ने व्याकरण पढ़ने की इच्छा प्रकट की ताकि उन्हें वेदों का यथार्थ ज्ञान हो सके और उनका मन आधुनिक सम्प्रदायों से हट जाए। इस पर दण्डीजी बोले-आप व्याकरण-ग्रन्थ अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य नहीं सीख सकोगे क्योंकि इसके लिए प्रतिदिन तीन घण्टे श्रम करना पड़ेगा। इस पर राजा ने कहा कि यदि मुझे अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य नहीं आ सकते तो कोई अन्य ग्रन्थ बनाकर मुझे पढ़ा दीजिए। दण्डीजी ने कहा कि इन आर्ष ग्रन्थों का कोई विकल्प नहीं है। अनुकूल अवसर पाकर दण्डीजी ने कहा-हे राजन्! आज अनार्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन के कारण बहुत अमंगल हो रहा है। इनके लेखक सामान्य जन हैं। वे तत्वदर्शी ऋषि नहीं हैं। ये अनार्ष ग्रन्थ ही भारत के पतन का कारण है। आर्ष ग्रन्थों की प्रतिष्ठा मे बिना देश का कल्याण सम्भव नहीं है। शास्त्रों की मान्यता के विषय में मौलिक सुधार की आवश्यकता है परन्तु ब्राह्मण वेदहीन हो रहे हैं। आप में क्षत्रियोचित गुण विद्यमान है। आप एक सार्वभौम वैयाकरण महासभा का आयोजन कीजिए। इस सभा में गर्वनर जनरल को पधारने की अनुमति भी लेवें। इस महासभा में शास्त्रार्थ का विषय हो कि अष्टाध्यायी तथा महाभाष्य ही व्याकरण के मुख्य ग्रन्थ हैं। मैं सिद्ध करूँगा कि कौमुदी, मनोरमा, न्यायमुक्तावली, भागवत पुराण आदि नवीन ग्रन्थ अशुद्ध है। दण्डीजी के प्रस्ताव को महाराजा ने ध्यान से सुना और फिर सार्वभौम महासभा का आयोजन स्वीकार किया मगर बाद में कई प्रकार के बाहरी दबाबों में आकर दण्डी जी द्वारा स्मरण कराने के बाबजूद भी राजा यह सभा आयोजित नहीं कर सके। दण्डी जी ने कश्मीर के राजा रणवीर सिंह और ग्वालियर के राजा जयाजीराव को भी इस आशय के पत्र लिखे मगर सब व्यर्थ ही गया।